ISSN : 2582 2802
A Refereed and Peer - Reviewed International e-Journal of Humanities and Social Sciences
by School of Humanities and Social Sciences
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad

बालनाटक - विभिन्न स्तर

Digish H. Vyas
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University
School of Humanities and Social Sciences
Assistant Professor – Performing Arts
Ahmedabad, Gujarat, India
digish.vyas@baou.edu.in

Abstract (सार): बालक में अनुकरण करने की प्रवृत्ति सबसे अधिक होती है इसी के आधार पर वह बोलना - दौड़ना प्रारंभिक क्रियाएँ सीखता है! इतना मनोरंजन साहित्य की अन्य विधाएँ उसे नहीं दे सकती! अत: बालसाहित्य के लिए सबसे प्रभावशाली विधा नाटक है! बच्चे को भी - हनुमान, पायलट, इंस्पेक्टर आदि पसंद आते है!

राष्ट्रिय नाट्य विध्यालय (NSD) की संस्कार टोली द्वारा 'जश्ने बचपन' व् 'बालसंगम' कार्यक्रम इस प्रगति में सहायक है! ऐसा एक आन्दोलन है 'शिक्षा में रंगमंच' - जहाँ नाट्यप्रशिक्षित शिक्षक एवं बच्चो की भागीदारी इस आन्दोलन को मजबूत करेगी!

प्रो. रामगोपाल बजाज कहते है - बच्चे अपने लोकगीतों - लोकनृत्यों - लोकनाट्य रूपी गुलदस्तो का उपहार दूसरों को देने की इच्छा रखते है और दूसरो की सांस्कृतिक विशिष्टताओं से परिचित होने की आकांक्षा भी कहते हैं! वे नई सदी के नए भारत में संस्कृति के नए मुहावरे गढ़ना चाहते है! उनकी निश्छल मनोभावनाएं चारों दिशाओ में छलक सके इस दिशा में प्रयास करना चाहिए!

पत्थर के टुकडो को हाथो की उंगलियों के बीच में नचाकर राजस्थान का बालकलाकार - 'जयपुर से निकली गाड़ी - दिल्ली चली होले होले' - गाता है तब प्रभाव पड़ता है! वह प्रभाव TV में गायब है! रंगमंच में अभिनेता - दर्शक , क्रिया - प्रतिक्रिया सब आमने सामने - प्रत्यक्ष है!

Key Words (महत्वपूर्ण शब्द): अनुकरण, बालसाहित्य, नाट्यप्रशिक्षित, रंगमंच, क्रिया - प्रतिक्रिया, बालनाटक, बालरंगभूमि, भवाई, शिक्षारंजक (Infoentertaining), पार्श्वसंगीत, तकिया कलाम, थियेटर गेम्स

गुजरात में बालनाटक की बात करें तब हमें बालरंगभूमि के महान विचारक एवं बच्चो के मित्र - मार्गदर्शक गिजूभाई बधेका का नाम स्मृति में प्रथम आता है! मुंबई में भी गुजराती बच्चो के लिए वनलता बहन, श्री नामदेव लहुटे सक्रिय रहे! नाट्याचार्य चन्द्रवदन महेता एवं वनलताजी ने बालनाटक का पाठ्यक्रम तैयार किया जिससे विधिवत् नाटक की शिक्षा बच्चों की वय - कक्षा के अनुसार दी जा सके!

अभिभावक अपने बच्चो को मंच पर देखकर प्रसन्न हों यह स्वाभाविक है! बच्चो के व्यक्तित्व विकास में भी इससे लाभ होना था अत: मुंबई के सिवा गुजरात के बड़े शहरों में भी बालनाटक लिखे जाने लगे - प्रस्तुतियाँ भी होने लगी! सत्य यह है कि वर्तमान समय में और अतीत में भी बच्चों के इस साहित्यप्रकार की अपेक्षा नाटक कम लिखे जाते और उससे भी कम प्रस्तुतियाँ होती!

अमदावाद में श्री जनक दवे जो दक्षिणामूर्ति - गिजुभाई बधेका की शिक्षाप्रणाली में दीक्षित थे - आदर्श को लक्ष्य बनाकर बालनाटक लिखते - नाट्यप्रशिक्षक भी थे अत: मंचित भी करते थे! प्राय: उनके नाटकों में दादाजी आते जो लेखक के विचार प्रस्तुत करते! 'भवाई' गुजराती लोकनाट्य में सिद्ध-प्रवीण होने से अपने बच्चो को अच्छी शिक्षा - संस्कार देनेवाले वेश लिखे! संगीत में ज्ञान एवं रस होने से गीत - नृत्य का अच्छा प्रयोग किया! बच्चो के पक्षधर उन्होंने 'વડીલોના વાંકની ભવાઈ' (अभिभावकों के दोष) में बच्चो की शिकायतें प्रकट की! उनका रंगला घुमने जाता है तब भी ट्राफिक का अनुशासन - स्वच्छता, वृद्धों को सहाय करने का ध्यान रखता है!

'રંગલો ચાલ્યો ફરવા, સાથે બાળકોને મળવા

અને વાત મજાની કહેવા, આવો સારા નાગરિક બનવા'

अंत में जनकवाक्य से आशावादी गीत प्रचार बन जाते है! पर्यावरण की समस्या विषयक 'પાણી ની કહાની' एवं 'આવો ઓળખીએ ગ્રહ – ઉપગ્રહ' संवाद - गीतों के साथ media का उपयोग या नाट्य द्वारा शिक्षा के तत्व समाविष्ट करने से शिक्षारंजक (Infoentertaining) बन सकते है ! बाष्पीभवन की क्रिया, नैरुत्य से आते मौसमी पवनो से बारिश आदि समझाना आसन हो जाता! मनुष्य के अंग - उसके उपयोग की बात में भी अब आधुनिक समय के बच्चो के लिए रंगतंत्र या प्रदर्शन की शैली में नयापन लाना चाहिए!

अमदावाद में श्री चन्द्रकान्त ठक्कर 'नेह' ने भी बालनाटक प्रस्तुत किए! श्रेयस फाउन्डेशन में लीना मंगलदास ने बहुत विशाल फलक पर अनेक युक्ति प्रयुक्तियो के साथ विश्व की महान बालकहानियो पर आधारित बालनाटक लिखे एवं भव्य प्रस्तुति की! ध महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी, फेकल्टी ऑफ़ परफोर्मिंग आर्ट्स, नाट्य विभाग के पूर्व अध्यक्ष, प्राध्यापक हरीश व्यास को बच्चो के लिए विशेष रूप से लिखे 'बालभारत' में सहयोगी होने का अवसर मिला था! लीनाजी ने देश विदेश के थियेटर देखे है - जानकारी एवं प्रस्तुति के लिए संसाधन जुटा सकती है! पर यह सब के लिए संभव नहीं है! त्यौहार एवं पर्व पर छोटे बच्चो के साथ रंगभूमि पर होनेवाली शोभायात्राएँ आकर्षक एवं ज्ञानवर्धक होती है!

मुंबई में प्रागजी डोसा सक्रिय थे! 'नटखट जयु' (जयेश गौकाणी) ने बच्चो के मन एवं अभिभावकों की अपेक्षा बखूबी समझा और व्यावसायिक रूप से बालनाटक किए! बच्चो के पसंदीदा कहानी लेखक 'जीवराम जोशी' - तारक महेता एवं उनके प्रिय पात्रो पर - छको, मको, मियाँ फुसकी, बीरबल की बेटी, टपुडो,

टारझन, मिकी माउस, मोगली इन मुंबई, जैसे नाटक बड़े शहरो में मंचित किए! पार्श्वसंगीत, चमत्कृति एवं वेशपरिधान पर उनका विशेष आग्रह रहता था! हर नाटक में तकिया कलाम जैसी एक उक्ति - जैसे 'આપણે તો ભાઈ' रहती जिसे बच्चे पात्र के साथ ख़ुशी से दोहराते! 'जयु' ने स्कुलो में भारतीय इतिहास को बच्चो के समक्ष नाट्यात्मक रीति से लाने के लिए 'આઝાદીની ગૌરવગાથા' कईबार प्रस्तुत की ! जिनमें कई प्रभावी अंशो का लेखन करने का अवसर प्राध्यापक हरीश व्यास को मिला! समय का प्रभाव देखिए - आज मुंबई में बच्चे शनि - रवि बालनाटक की प्रतीक्षा करें एसा कोई बालमंच नहीं है!

राजकोट में १९७९ में बालवर्ष निमित्त श्री अमुलख भट्टने बालरंगभूमि की स्थापना की! बच्चों से आए रुझुता (सरलता) से प्रकटीकरण करवानेवाले आपने नाट्य की शिक्षा एवं दीक्षा स्पष्ट होने से कई नाटक लिखे - मंचित किए! बच्चो ने गुजरात एवं कई राज्यों में पुरस्कार जीते! उनकी संस्था विश्व थियेटर के साथ जुडी! राजकोट में २००४ में International Children Festival रखा जिसमे श्रीलंका, बांग्लादेश और भारत के कई राज्यों से प्रशिक्षक व् बच्चे आए! चार दिन के महोत्सव में आदान - प्रदान से कई नए विचार प्राप्त हुए!

श्री अमुलख भट्ट के खुले मन के कारण उन्होंने सूरत से प्राध्यापक विजय सेवक और वडोदरा से प्राध्यापक हरीश व्यास को सहभागी व् प्रशिक्षक के रूप में निमंत्रण दिया! अच्छी जानकारी व उपलब्धि रही! २०१० तक सक्रियता से कार्यरत रहे एवं 75 प्रयोग किये बालनाटको के - आ

पका कहना है की इस प्रवृत्ति से बच्चो को आनंद आता है साथ ही स्कुल की परिपाटी से भिन्न अनुशासन सीखते है! वार्षिकोत्सव पर स्कुल में प्रदर्शनार्थ करवाए जाते बालनाटक से कुछ लाभ नहीं होता, व् अच्छी रसरुची बनी होती है उसमे क्षति पहुंचने की सम्भावना रहती है! अमुलख भट्ट से प्रशिक्षित बच्चों ने राष्ट्रिय शिष्यवृत्तियां पाई हैं, कई आज भी रंगमंच से जुड़े है! लेखक - निर्देशक का अपना बचपन - जीवनशैली संस्कार आदि उसके लेखन निर्देशन में दिखाई देना स्वाभाविक है! चाहकर यत्नपूर्वक उसे बच्चो के मानस चिंतन - अपेक्षाओ के साथ जोड़ना चाहिए! नाटक - 'लाडकवाया' 'वांदरसेना' - प्रयोग में विशेषता यह रही की तकनिकी सञ्चालन भी बच्चे ही करते थे!

मुझे नाट्यप्रतियोगिताओ में निर्णायक तौर पर एवं राष्ट्रिय कक्षा में प्रतिभागी के तौर पर बालनाटक देखने - समझने के अवसर मिले है! प्रतीत होता है बालकाव्य और कहानियो में निहित नाट्यतत्व को उजागर करनेवाले नाटक लिखे जाए एवं उसके अनुरूप संवाद - अभिनय - गीत - नृत्य का आयोजन किया जाए तो लिखित बालनाटकों के अभाव से मार्ग निकल सकता है!

वडोदरा में श्री पी.एस.चारी त्रिवेणी के सदस्यों के लिए नूतन शैली के नाटक करने के साथ बच्चो के लिए भी प्रयोग करते है! आप बालनाटक के उपयुक्त एवं आधुनिक मानस अनुरूप विषय तलाशते रहते है! सत्यजितराय की बंगाली फिल्म - 'गूपी गाइन बाघा बाइन' पर मूल अंग्रेजी से आधारित 'गबो गवैयो - बाघा बजैयो' गीत - नृत्य सभर बालनाटक २५ बच्चो को लेकर तैयार किया! सफ़दर हासमी ने भी इस नाटक का अनुवाद किया हुआ है!

बादल सरकार के - In the Land of Hatimtalla (इन ध लेंड ऑफ़ हातिमतल्ला) का कथानक आज भी प्रभावित करनेवाला है! दो चोर चोरी करके भागते है! अपने को बचाने के लिए नदी में कूद पड़ते है और तैरते तैरते एसे गाँव में पहुचते है जहाँ किसी घर के द्वार पर ताला ही नहीं है! आश्चर्य यह है की उस गाँव के वाचनालय पर अवश्य ताला लगा है! "पुस्तक अमूल्य खजाना है" इस प्रकार के हजार सूत्र या भाषणों से यह क्रियात्मक द्रश्य कितना प्रभावी है! लेखक ने वक्रोक्ति यह भी की है कि यह एक स्वप्न था!

एक चीनी कहानी - ब्रश जिवंत होकर बच्चे की इच्छानुसार कार्य करता है! श्री चारी ने सोये बच्चे को सपने में अपनी दुनिया के पात्र चंद्रलोक ले जाते है एसा दर्शाया हैं - याद करे इन पंक्तियों को -

'बच्चो के नन्हे हाथो को यह चाँद सितारे छूने दो,
दो चार किताबे पढ़कर यह भी हम जैसे हो जायेंगे!'

चरणदास चोर एक लोककथा है ! हबीब तनवीर ने छत्तीसगढ़ के कलाकारों को लेकर इसे आंतरराष्ट्रिय बना दिया! सत्य के आग्रह के कारन कड़ी होती हास्यजनक समस्याओ को गीत-नृत्य के माध्यम से बालनाटक रूप में भी प्रस्तुत किया जा सकता है!

बालनाटक का विषय ढूंढने के लिए द्रष्टि चाहिए साथ ही प्रस्तुति का अनुकूल कौशल्य! जैसे छंद जाने बगैर अछांदस कविता नहीं लिखी जाती, वैसे ही नाट्यकला - शिक्षा अनुभव के बिना बालनाटक करना नादानियत हो सकती है!

कई लेखक - निर्देशक बड़ो के प्रसिद्द नाटक या कहानी को बालनाटक में परिवर्तित करने का साहस करते है! श्री चारी ने 'मेकबेथ' आधारित 'शतरंज' नाटक को ब्रिटिश काउन्सिल में मंचित किया! महत्वाकांक्षा के दुष्परिणाम का तत्व रखते - स्कुल के चुनावो से बच्चे किस तरह प्रपंची बन जाते है - क्या यह empowring या सशक्तिकरण का साधन है? यह नाटक मैंने देखा नहीं पर बालमानस पर होनेवाले प्रभाव की शंका रहती है! (नाटक माध्यमिक स्कुल के छात्रो को लेकर खेला गया था!)

वैसे ही वडोदरा में डॉ. देवल दासगुप्ताने ज्योर्ज ओरवेल के उपन्यास 'एनिमल फार्म' का बालनाटक में रूपांतरण किया व प्रस्तुत किया! वडोदरा में दर्शकोने उसे स्वीकार नहीं किया! बच्चे के मनमस्तिष्क को जो बाते पल्ले नहीं पड़ती, वे हमें लेखक निर्देशक को अच्छी लगती है इसलिए थोपना ज्यादती है! साथ ही हमें सीखना होगा कि ग्लोब थियेटर में शेक्सपियर फॉर चिल्ड्रन की एक शाखा है वह किस तरह से रूपांतरण - प्रस्तुति - आयोजन करती है!

'सर्कस' शब्द से दो नाटक की स्मृति होती है ! जनक दवे के नाटक में जीवदया से प्रेरित बच्चे ही पशु बनकर खेल दिखाते है - अच्छी बात है! अधिक प्रभावित चीनी कहानी पर आधारित नाटक है जिसमे सिंह को पकड़कर 'सर्कस' में ले जाया जाता है! सिंह विद्रोह करता है! ट्रेइनर कहता है -'ताकत से नहीं अक्ल से काम ले' सिंह विश्वास संपादित करके भाग जाता है! डरता - छिपता - पुरानी चीज़े बेचनेवाली antique दुकान में पहुच जाता है! शिकारी स्वयं चले आए सिंह को देखकर दंग रह जाते है कि - 'यह तो बेठे-बिठाए लाखो की कीमत का चमड़ा हाथ आया' शिकारियों से जान बचाकर भागता सिंह वनविभाग के हाथो पकड़ा जाता है!

शिकारियो को सजा मिलती है! मुक्ति पाकर जब सिंह वन में पहुचता है तब सारे प्राणी सर्कस में जाने के लिए ख़ुशी से झूम रहे है कि अब खाने का इन्तझाम हो गया है! सर्कस से वापस आये सिंह को बड़ा आघात लगता है! एक नई सोच और प्रवर्तमान व्यवस्था पर जबरदस्त प्रहार के साथ नाटक पूर्ण होता है!

बंगाल - महाराष्ट्र - कर्णाटक में बालनाटक होते है! गुजरात में इलेक्ट्रोनिकस मिडिया के कारन अधिक कमी आई है! यह कहना अर्धसत्य होगा कि विश्व एक गाँव बन गया है! तब जरुर नए युवा लेखको को आगे आना चाहिए जो पुराने ठर्रे से बोध - उपदेश न देकर आधुनिक बालक को समय के अनुरूप नाट्यप्रवेश करवाएँ! स्कुलो में शिक्षा - परीक्षा का दबाव, आनंद प्रमोद के वीडियोगेम्स आदि साधनों की उपलब्धि ने श्रमयुक्त सर्जनात्मकता पर नकारात्मक प्रभाव डाला है! उसमे से अपनी राह खोजकर 'लिटल थियेटर' के 'इन्दु पुवार' यत्नशील है! वह थियेटर गेम्स का उपयोग करते है! पार्श्व संगीत के स्थान पर बच्चो द्वारा प्रयुक्त विशिष्ट ध्वनिओ का उपयोग करते है! कहानी में नयापन लाने का यत्न करते है! जिससे बच्चो की सर्जनात्मकता खिलती है!

'જંગલ જીવી ગયું રે લોલ' नाचते - गाते बच्चो में से एक कहानी कहता है! राजा और उसके दो बेटे रवि - सोम की पारिवारिक कहानी! विदूषक जैसे हाजी एवं नाजी - लोगो के विद्रोह का कारण हैं! जीने के लिए जमीन दो अन्यथा हम राज्य की जमीन ले लेंगे! तीसरा बेटा बुध नगर के पासवाली जंगल की जमीन देने को कहता है जो निकम्मी -अनुपयुक्त है! पशु - बंदर - भालू बने बच्चों से बुध के दो - दो हाथ हो जाते हैं! बुध - शनि राक्षस के कारण जंगल में नहीं रह सकता एसा पशु बताते है! शनि आते ही हाजी - नाजी डरते है, लय में रोते है! शनि हार जाता है - ताली बजाते सैनिक आकर नृत्य करते है! बुध अपना उद्देश बताता है कि जंगल में मनुष्य आयेंगे तब शनि राक्षस कहता है 'फिर जंगल - जंगल नहीं रहेगा - पशु - पंछियो को भी पूछना पड़ेगा'! राजमहल में चिंता का वातावरण.... कहानी में आकर्षक मोड़ आता है! मनुष्य वन में आते ही पशुओ पर आक्रमण करते है! उन्हें अपने स्वार्थ के कारण प्रकृति से मिलजुलकर रहना अच्छा नहीं लगता! धीरे धीरे जंगल का नाश होने लगता है! हिरन को फंसाते है! भालू को मारते है! नगरजनो की धृष्टता से त्रस्त बुध वनदेवी को बुलाता है! अपने पिता से बुध कहता है, 'में निष्फल रहा - मनुष्य जंगल में आएँगे तो जंगल मर जाएगा' - मुझे उसे जिन्दा रखना है! वनदेवी की भी यही इच्छा है - अंत में गीत -

'અમે રમતા રહીશું રાજ કે જંગલ જીવી ગયું રે લોલ'.

'झूनझूनझू बुबलाबू' - जादूगर खेल दिखाता है! बच्चे गेंद खेलते है! अंगभाषा -मूकाभिनय - आवाज का उपयोग - चित्ताकर्षक है! (वे पेड़, खम्भा, कुत्ता, बिल्ली कुछ भी बन सकते है) एक झूनझूनझू राक्षस गेंद लेने गए बच्चो को पकड़ लेता है! तभी टीटीहरी (टीटोडी) ने समंदर को झुकाया था उसी जोश से कहती है - राक्षस झूनझूनाझू है तो में सिनसिनाकी बुबलाबू हु! टीटीहरी - अपने भाईयो के साथ राजकुमारो को भी बचाना चाहती है!

१९९९ में प्रकाशित बालनाटक संग्रह 'ભગવાનની ભેંસ' के लेखक ने १९४१ में स्थापित करांची की संस्था 'शिशुकुंज' के साथ आधा जीवन बिताया! आवश्यकता पड़ने पर लिखने लगे - संग्रह के नाटक अभिनेय रोचक है!

'अंधेर नगरी' कवि दलपत राम की कविता के आधार पर छोटे छोटे रंजक संवादों के साथ बच्चो को पसंद आनेवाला बना है! विषय में अभी भी नयापन है! विषय बदलते रहते है 'होहोलिका' भी Farce रूप में किशोर / बच्चो के लिए प्रस्तुति सफलता से हो सकती है!

वर्तमान समय में नडियाद में 'બાલકનજીની બારી' अभी भी शिबिरों के माध्यम से नाट्य लेखन व प्रस्तुति के लिए सक्रिय है!

प्राध्यापक हरीश व्यासने दो दशक बालभवन सोसायटी वडोदरा के साथ मानद बालनाटक शिक्षक के रूप में कार्य किया और कई नाटक लिखे! इसे सर्जनात्मक नाटक रचना प्रक्रिया कह सकते है! जिसमें बच्चो एवं प्रशिक्षकमित्र के सहयोग से नाटक की संरचना होती है - बनती जाती है! आपने २० से अधिक नाटक लिखे व् निर्देशित किए! प्राध्यापक हरीश व्यास लिखित दिग्दर्शित एवं बच्चो द्वारा प्रस्तुत 'आज़ादी जो हमने जानी' और 'कुछ खोया है' दिल्ही बालभवन आयोजित महोत्सव में राष्ट्रिय पुरस्कार से सम्मानित हुआ!

आलेख के प्रस्तुतकर्ता ने भी बालभवन सोसायटी वडोदरा में नाट्य शिक्षक के तौर पर कार्य किया है! श्री गिजुभाई बधेका रचित 'દિવાસ્વપ્ન' नाटक का मंचन गुजरात के कई शहरो में किया - जिसमे बच्चो ने सराहनीय अभिनय किया एवं दर्शको को बहुत पसंद आया!

संदर्भ ग्रन्थ:

१) श्री जनक दवे: રંગલો ચાલ્યો ફરવા, વડીલોના વાંકની ભવાઈ, 'પાણી ની કહાની', 'આવો ઓળખીએ ગ્રહ – ઉપગ્રહ'
२) प्राध्यापक हरीश व्यास: 'आज़ादी जो हमने जानी' और 'कुछ खोया है' 'આઝાદીની ગૌરવગાથા' कुछ अंश
३) श्री बादल सरकार – In the Land of Hatimtalla (इन ध लेंड ऑफ़ हातिमतल्ला)
४) श्री हबीब तनवीर: चरणदास चोर
५) ज्योर्ज ओरवेल: उपन्यास 'एनिमल फार्म' रूपांतरण - डॉ. देवल दासगुप्ता
६) श्री इन्दु पुवार: જંગલ જીવી ગયું રે લોલ, झूनझूनझू बुबलाबू